Knowledgeable Research (An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal) **ISSN 2583-6633**
Available Online: http://knowledgeableresearch.com Vol.04, No.2, February, 2025

वैदिक काल में कृषि व्यवस्था : एक समीक्षात्मक अध्ययन

सविता सिंह(शोधच्छात्रा)
संस्कृत एवं प्राकृत भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

****

शोध सार

प्राचीनकाल से ही भारत को कृषि प्रधान देश की मान्यता प्राप्त है। समाज की आर्थिक स्थिति कृषि और पशुपालन पर ही निर्भर करती थी।आर्य लोग कृषि कार्य सम्यक रूपेण संपन्न करते थे। कृषि कार्य कृषि उपकरणों से किए जाते थे। सिंचाई के साधन कुल्या(नहर), वर्षा,सरोवर, कुआँ,नदी आदि उपलब्ध थे। भूमि उर्वरा के लिए खाद्य का प्रयोग भी प्रचलित था। कालक्रम से कृषिकर्म का विकास होता गया और भिन्न-भिन्न प्रकार की फसलों का उत्पादन किया जाता था। कृषि के क्रमिक विकास में जिनका विशद् महत्व है।

Keywords: *वैदिक काल और कृषि |*

****

भारत एक कृषि प्रधानदेश है। वैदिक युग में भी लोगों का व्यवसाय कृषि और पशुपालन था।ऋग्वेद तथा अन्य वैदिक ग्रंथों से हमें व्यवस्थित ढंग से कृषि व्यवस्था के प्रमाण प्राप्त होते हैं।प्रारंभिक वैदिक युग (ऋग्वैदिक काल) जौ (यव) एवं धान्य उपजाने का विवरण मिलता है। खाद्यान्न उत्पादन के अतिरिक्त कृषि संबंधी उपकरणों का भी उल्लेख मिलता है।ऋग्वेद के दशम मण्डल में खेती की विधि और उपकरणों का उल्लेख मिलता है,इसके साथ ही लोगों को कृषि कर्म के लिए प्रेरित किया जाता था जैसा की दृष्टव्य है-

अक्षैर्मादीव्यः कृषिमित्कृषस्व वित्तेरमस्व बहु मन्यमानः।

तत्र गावः कितव तत्र जाया तन्मे विचष्टे सवितायमर्यः।।१

कृषि सीखने सिखाने का वर्णन ऋग्वेद के प्रथम मण्डल में प्राप्त होता है जहाँ उल्लेख किया गया है कि अश्विन देवताओं ने मन को हल चलाना और जौ की खेती करना सिखाया-

"भव कृकेणाश्विनावपन्ते

से दुहन्ता मनुषाम दस्त्रा

अभि दस्युं वकुरेणा घमन्तो

रुज्योतिश्रक मुरार्थाथ।"२

मानव जीवन का आधार अन्न है, अन्नों की प्राप्ति कृषि से होती है। कृषि कार्य अत्यंत गर्व का कार्य माना जाता था। ऋग्वेद ,यजुर्वेद एवं अथर्ववेद में कृषि संबद्ध अनेक सूक्त हैं जिनमें कृषि संबंधी प्रमुख बातें निर्दिष्ट है।३

यथा- 1-बीजवपन से पहले खेत को ठीक ढंग से स्वच्छ करें।

2- कृषि हेतु बैल, हल आदि उत्तम कोटि के हो।

3- उत्तम कोटि के बीजों का वपन किया जाए।

4-अनुकूल ऋतु में बीज वपन किया जाए।

१-ऋग्वेद 10/34/13

२-ऋग्वेद 1/117/21

३-ऋग्वेद 10/101,.4/57,यजुर्वेद 12/67/71 अथर्ववेद 3/17/1-9

5- आवश्यकतानुसार सही समय पर सिंचाई, निराई की जाए।

6- फसल तैयार होने पर कटाई ,मड़ाई की व्यवस्था की जाए।

कालक्रम की दृष्टि से ऋग्वेद के परवर्ती अंशों से स्पष्ट होता है कि आर्य लोग बैलों द्वारा खींचे जाने वाले हलों से खेती करते थे। ऋग्वेद में कई स्थलों पर खेत जोतने का, हल चलाने का व फसलों से हरे-भरे खेतों का उल्लेख मिलता है।४

पर्याप्त अन्न प्राप्त हो इसके लिए स्तुति भी की गई है ,खेत बोने के समय मंत्र का उच्चारण भी किया जाता था।

पृथ्वी सूक्त में भूमि को माता और पर्जन्य को पिता कहा गया। ऋग्वेद में कृषि-कर्म और उसके उपकृत्यों का वर्णन कई स्थलों पर है।कृष्ट तथा अकृष्ट भूमि के लिए उर्वरा, क्षेत्र,फर्वर प्रभृति शब्दों का प्रयोग किया गया है।ऋग्वेद में५अश्विन युग्म में मनु को

बीज बोने की कला सिखाई और आर्यों को हल की सहायता से कृषि-कर्म सिखलाया। ऋग्वेद में हल के लिए **सीर** और **लाङ्गल** हल चलाने वाले के लिए कीनाश तथा हल चलाने से बनी रेखा के लिए **सीता** शब्दों का प्रयोग दिखलाई देता है। आर्य लोग खेतों की जुताई,बुवाई, कटाई,सिंचाई आदि अच्छे ढंग से संपन्न करते थे।

कृषि उपकरण- हल के प्रयोग किये जाने का ऋग्वेद के कई स्थलों में इसका प्रयोग मिलता है। ऋग्वेद के दसवें मण्डल में कृषि संबंधी सभी प्रक्रियाओं का उल्लेख है,जङ्गल काटने, भूमि जोतकर बीज बोने, हंसिया से काटकर फसल घर ले जाने,खनिहाल में फसल जाकर मड़ाई करने का उल्लेख, भूसा अलग करने के लिए चलनी (तितउ) और सूप(शूर्प)का वर्णन है। उसाई करने वाला **धान्यकृत** कहलाता था। आठ अन्य मापने के बर्तन को **उर्वर** कहा गया है।

उत्तरवैदिक कालीन साहित्य में **चार, छह, आठ, बारह, और यहाँ तक कि चौबीस बैलों** द्वारा खींचे जाने वाले हल के उल्लेख है, जो इस बात के द्योतक है कि कठोर भूमि को

४-ऋग्वेद 8/24/27

५-ऋग्वेद 1/112/16

जोतने के लिए दो से अधिक बैलों को लगाया जाता था।

वैदिक काल में **खदिर तथा उदुम्बर** के बने हल के फालों का उपयोग होता था।

अन्य कृषि उपकरण- ऋग्वेद में **कुदाल, दरात(दात्र),सृणि** तथा **कुल्हाड़ी** का उपयोग करने का उल्लेख मिलता है।

सिंचाई के साधन- सिंचाई के लिए कुओं और नहरों पर लोग निर्भर रहते थे। वेदों में सिंचाई के कई साधनों का उल्लेख मिलता है जैसे- वर्षा, कुल्या, नहरों से, सिंचाई, नदियों से, तालाबों एवं कुओं के जल से।**शतपथ ब्राह्मण** में प्रतीची दिशा में प्रवाहित नदियों से भी सिंचाई सुविधा प्राप्त होने का प्रमाण मिलता है। **यजुर्वेद में** सिंचाई के अन्य साधनों का उल्लेख मिलता है जैसे- स्रुत्य(नाला),पत्थ्य(पतली नालियों द्वारा),कुल्या,नीप्य वैशन्त, आवट्य (गड्ढों, पोखरों का जल)।

प्रमुख फसलें - ऋग्वैदिक काल में जौ (यव) के उत्पन्न किये जाने का व्यापक उल्लेख मिलता है।**उत्तरवैदिक ग्रंथों में बारह (१२) प्रकार के अन्नों के नाम दिये गये हैं६ -**

1-व्रीहि(धान),2-यव(जौ),3-माष(उड़द), 4-तिल,5-मुद्ग(मूंग),6-खल्व(चना),7-प्रियंगु(कंगनी),8-अणु(पतला चावल), 9-श्यामाक(सावाँ),10-नीवार(कोदों, तिन्नी धान), 11-गोधूम(गेहूँ),12-मसूर।

खाद्य का प्रयोग- वैदिक काल में कृषि को अधिक उपजाऊ बनाने हेतु खाद्य के उपयोग किए जाने का उल्लेख मिलता है। गाय के गोबर को खाद्य के रूप में अधिकाधिक प्रयोग किया जाता था। ऋग्वेद में खाद्य के लिए क्षेत्र **साधस्** शब्द का प्रयोग किया गया।**७** अथर्ववेद में भी पशुओं के गोबर की खाद्य के प्रयोग की संकेत मिलते हैं।**८** वैदिक ग्रंथों में करीष, शकन्, शकृत् (गोबर)आदि शब्दों का प्रयोग मिलता है।**९**

कृषि नाशक तत्व- कृषि नाशक तत्वों को **ईति** कहते थे।अतिवृष्टि और अनावृष्टि जिससे कृषि नष्ट ना हो ऐसी कामना भी की गई है।**१०** तीव्र धूम और हिमपात कृषि को नष्ट न करें ऐसी प्रार्थना की गई है।**११**

६- व्रीहयश्च मे यवाश्च मे। यजु० 18/12, तैत्तिरीय संहिता 4/7/4/2

७-ऋग्वेद 3/8/7

८- अथर्ववेद 3/17

९-अथर्ववेद 3/14/3

१०- मा नो वधीर्विद्युता देवसस्यं, मोतवधी: सूर्यस्य रश्मिभि:, अथर्ववेद 7/11/1

११-न घ्रन ततप न हिमो जघान

आखु (चूहा) का नाम मुख्य रूप से कृषि नाशकों में किया गया और इसे मारने का भी निर्देश दिया गया है।**१२**

तर्द,पतंग जभ्य और उपक्वस् ये शब्द भी कृषि नाशक है।**१३**

तत्कालीन समाज में भूमि का स्वामित्व- तत्कालीन समाज में भूमि पर व्यक्तिगत स्वामित्व नहीं मिलता था।राजा को भी भूमि का संरक्षक नहीं माना गया। सामूहिक रूप से भूमि का स्वामित्व स्वीकार किया गया।राजतिलक के समय पुरोहित राजसत्ता की घोषणा करते हुए कहता था- **हे राजा ! यह राज्य तुम्हें कृषि कार्य, लोगों की भलाई, समृद्धि और उन्नति के लिए दिया जाता है।१४**

निष्कर्ष - प्रस्तुत शोध पत्र वैदिक कालीन कृषि व्यवस्था का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है। इस शोध पत्र में ऋग्वैदिक

और उत्तर वैदिक युगीन आर्यों द्वारा की जाने वाली कृषि व्यवस्था प्रक्रियाओं की जानकारी मिलती है।

१२- हतं तर्द.....आखुम् अथर्ववेद 6/50/1

१३-तर्द ,पतङ्ग, जभ्य, उपक्वस् अथर्ववेद 6/50/2

१४-ऐतरेय ब्राह्मण 7/18

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1-वैदिक साहित्य संस्कृति का समीक्षात्मक इतिहास पांडे ओमप्रकाश न्यू एज इंटरनेशनल प्राइवेट लिमिटेड पब्लिशर्स 1996

2- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति ,द्विवेदी कपिल देव विश्वविद्यालय प्रकाशन ,सप्तम संस्करण 2018

3- कृष्ण मोहन, श्रीमाली, प्राचीन भारत का इतिहास पृष्ठ-123

4- शर्मा ,रामचरण, प्रारंभिक भारत का आर्थिक एवं सामाजिक इतिहास, पृष्ठ-134

5-ऋग्वेद 8.24.27

6-ऋग्वेद 2.41.16

7-ऋग्वेद 7.36.6

8-ऐतरेय ब्राह्मण 7.18

9-शतपथ ब्राह्मण 1.5.6.3

10-अथर्ववेद 3.17

11- तैत्तिरीय संहिता 2.2.11.2

Corresponding Author: Savita Singh
E-mail: savisingh155@gmail.com

Received: 08 February, 2025; Accepted: 18 February, 2025. Available online: 28 February, 2025
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Noncommercial 4.0 International License